श्रीगुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि।
बरनऊं रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि।।

श्री गुरु महाराज के चरण कमलों की दूरी से अपने मन रूपी दर्पण को पवित्र करके श्री रघुवीर के निर्मलिया का वर्णन करता हूं चारों अर्थ काम और मोक्ष को देने वाला है।

बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन-कुमार।
बल बुद्धि बिद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस बिकार।।

पवन कुमार नाम का सुमिरन करता हूं आप तो जानते ही हैं कि मेरा शरीर और मेरी बुद्धि निर्बल है मुझे शारीरिक बल सद्बुद्धि एवं ज्ञान दीजिए और मेरे दुखों और दोषों का नाश कर दीजिए।

🙏 ॐ चोपाई ॐ 🙏

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर।
जय कपीस तिहुं लोक उजागर।।

श्री हनुमान जी आपकी जय हो आपका ज्ञान और गुण अथाह है ए कपीश्वर आपकी जय हो तीनों लोगों को स्वर्ग लोक भूलो और पाताल लोक में आपकी कीर्ति है।

रामदूत अतुलित बल धामा।
अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा।।

पवनसुत अंजनी नंदन आप के समान दूसरा बलवान नहीं है।

महाबीर बिक्रम बजरंगी।
कुमति निवार सुमति के संगी।।

महावीर बजरंगबली आप विशेष आक्रमण को दूर करते हैं और बुद्धि वालों के साथ ही सहायक है।

कंचन बरन बिराज सुबेसा।
कानन कुंडल कुंचित केसा।।

आपका रंग स्वर्ण के समान है कानों में कुंडल और घुंघराले बालों से आप सुशोभित हैं।

हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै।
कांधे मूंज जनेऊ साजै।

आपके हाथ में है और कंधे पर मूंछ के जनेऊ की शोभा है।

संकर सुवन केसरीनंदन।
तेज प्रताप महा जग बन्दन।।

शंकर के अवतार केसरी नंदन आपके पराक्रम और महान यह संसार भर में वंदना होती है।

विद्यावान गुनी अति चातुर।
आप प्रकांड विद्या विधान है अत्यंत कार्य श्री राम के कार्य करने के लिए आतुर रहते हैं।

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया।
राम लखन सीता मन बसिया।।

श्री रामचरित ने में आनंद रस लेते हैं श्री राम सीता और आपके हृदय में बसे रहते हैं।

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा।
बिकट रूप धरि लंक जरावा।।

अपना बहुत छोटा रूप धारण करके सीता जी को दिखाया और भयंकर रूप धारण करके लंका को जलाया।

भीम रूप धरि असुर संहारे।
रामचंद्र के काज संवारे।।

आपने विकराल रूप धारण करके राक्षसों को मारा श्री रामचंद्र जी के उद्देश्यों को सफल कराया।

लाय सजीवन लखन जियाये।
श्रीरघुबीर हरषि उर लाये।।

आपने संजीवनी बूटी लाकर लक्ष्मण जी को चलाया जिससे श्री रघुवीर ने हर्षित होकर आपको हृदय से लगा लिया।

रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई।
तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई।।

श्री रामचंद्र ने आप की बहुत प्रशंसा की और कहा कि तुम मेरे भारत जैसे प्यारे भाई हों।

सहस बदन तुम्हरो जस गावैं।
अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं।।

श्रीराम ने आपको यह कहकर हृदय से लगा लिया कि तुम्हारा यश हजारों से सराहनीय है।

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा।
नारद सारद सहित अहीसा।।

श्री सनक, श्री सनातन, श्री सनंदन, श्री सनत्कुमार आदि मुनि ब्रह्मा जी देवता नारद जी सरस्वती जी शेषनाग जी सब आप का गुणगान करते हैं।

जम कुबेर दिगपाल जहां ते।
कबि कोबिद कहि सके कहां ते।।

यमराज कुबेर आदि सब दिशाओं के रक्षक कवि, विद्वान, पंडित या कोई भी आपके यश का पूर्ण वर्णन नहीं कर सकते।

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा।
राम मिलाय राज पद दीन्हा।।

आपने सुग्रीव जी को श्री राम से मिलाकर उपकार किया जिसके कारण हो राजा बने।

तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना।
लंकेस्वर भए सब जग जाना।।

आपके उपदेश विभीषण जी ने पालन किया जिससे वह लंका के राजा बने इसको सब संसार जानता है।

जुग सहस्र जोजन पर भानू।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू।।

जो सूरज यहां से सहस्त्र योजन की दूरी पर स्थित है जिस पर पहुंचने में ही हजारों युग लग जाएं और सूरज को आपने एक मीठा फल समझकर निकल लिया।

जलधि लांघि गये अचरज नाहीं।।

आपने श्री रामचंद्र जी की अंगूठी मुंह में रखकर समुद्र को लांग लिया इसमें कोई आश्चर्य नहीं है।

दुर्गम काज जगत के जेते।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते।।

संसार में जितने भी कठिन से कठिन काम हो की कृपा से सहज हो जाते हैं।

राम दुआरे तुम रखवारे।
होत न आज्ञा बिनु पैसारे।।

श्री रामचंद्र जी के द्वार कि आप रखवाले हैं जिसमें आपकी आज्ञा के बिना किसी को प्रवेश नहीं मिलता अर्थात की प्रसन्नता के बिना राम कृपा दुर्लभ है।

सब सुख लहै तुम्हारी सरना।
तुम रक्षक काहू को डर ना।।

जो भी आप की शरण में आते हैं उन सभी को आनंद प्राप्त होता है और जब आप रक्षक हैं तो फिर किसी का डर नहीं रहता।

आपन तेज सम्हारो आपै।
तीनों लोक हांक तें कांपै।।

आपके सिवाय आपके भाई को कोई नहीं रोक सकता आपके घर जना से तीनों लोग का जाते हैं।

भूत पिसाच निकट नहिं आवै।
महाबीर जब नाम सुनावै।।

जहां महावीर हनुमान जी का नाम सुनाया जाता है वह भूत पिशाच पास नहीं बता सकते।

नासै रोग हरै सब पीरा।
जपत निरंतर हनुमत बीरा।।

वीर हनुमान जी आपका निरंतर जप करने से सब लोग चले जाते हैं और पीड़ा मिट जाते हैं।

संकट तें हनुमान छुड़ावै।
मन क्रम बचन ध्यान जो लावै।।

हे हनुमान जी! विचार करने में कर्म करने में और बोलने में जिनका ध्यान आप में रहता है उनको सब संकटों से आप छुड़ाते हैं।

सब पर राम तपस्वी राजा।
तिन के काज सकल तुम साजा।

तपस्वी राजा श्री रामचंद्र जी सबसे श्रेष्ठ है उसके सब कार्यों को आपने सहज में कर दिया।

और मनोरथ जो कोई लावै।
सोइ अमित जीवन फल पावै।।

जिस पर आपकी कृपा हो वह कोई भी अभिलाषा करें तो उसे ऐसा फल मिलता है जिसकी जीवन में कोई सीमा नहीं रहती।

चारों जुग परताप तुम्हारा।
है परसिद्ध जगत उजियारा।।

चारों युग सतयुग त्रेता युग द्वापर युग तथा कलयुग में आप का यश फैला हुआ है जगत में आपकी कीर्ति सर्वत्र प्रकाशमान है।

साधु-संत के तुम रखवारे।
असुर निकंदन राम दुलारे।।

हे श्रीराम के दुलारे! आप सज्जनों की रक्षा करते हैं और दुष्टों का नाश करते हैं।

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता।
अस बर दीन जानकी माता।।

आपको माता श्री जानकी से ऐसा वरदान मिला हुआ है जिससे आप किसी को भी आठों सिद्धियां और नौ निधियां दे सकते हैं।

राम रसायन तुम्हरे पासा।
सदा रहो रघुपति के दासा।।

निरंतर श्री रघुनाथ जी की शरण में रहते हैं जिससे आपके पास बुढ़ापा और असाध्य रोगों के नाम के लिए राम नाम औषधि है।

तुम्हरे भजन राम को पावै।
जनम-जनम के दुख बिसरावै।।

आपका भजन करने से श्री राम जी प्राप्त होते हैं और जन्म जन्मांतर के दुख दूर होते हैं।

अन्तकाल रघुबर पुर जाई।
जहां जन्म हरि-भक्त कहाई।।

अंत समय श्री रघुनाथ जी के धाम को जाते हैं और यदि फिर भी जन्म लेंगे तो भक्ति करेंगे और श्री राम भक्त कहलाएंगे।

और देवता चित्त न धरई।
हनुमत सेइ सर्ब सुख करई।।

हनुमान जी आपकी सेवा करने से सब प्रकार के सुख मिलते हैं अन्य किसी देवता की आवश्यकता नहीं रहती।

संकट कटै मिटै सब पीरा।
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा।।

हनुमान जी जो आपका सुमिरन करता है उसके सब संकट कट जाते हैं और पीड़ा मिट जाती है।

जै जै जै हनुमान गोसाईं।
कृपा करहु गुरुदेव की नाईं।।

हे स्वामी हनुमान जी आपकी जय हो जय हो जय हो आप मुझ पर कृपालु श्री गुरु जी के समान कृपा कीजिए।

जो सत बार पाठ कर कोई।
छूटहि बंदि महा सुख होई।।

जो कोई हनुमान चालीसा का 100 बार बात करेगा वह सब बंधनों से छूट जाएगा और उसे परमानंद मिलेगा।

जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा।
होय सिद्धि साखी गौरीसा।।

भगवान शंकर ने यह हनुमान चालीसा लिखवाया इसीलिए वह साक्षी है कि जो इसे पड़ेगा उसे निश्चित सफलता प्राप्त होगी।

तुलसीदास सदा हरि चेरा।
कीजै नाथ हृदय मंह डेरा।।

है नाथ हनुमान जी! तुलसीदास सदा ही श्री राम का दास है इसीलिए आप उनके हृदय में निवास कीजिए।

🙏🕉 दोहा 🕉🙏

पवन तनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप।।

संकट मोचन पवन कुमार आनंद मंगल के स्वरूप है देवराज आप श्री राम सीता जी और लक्ष्मण सहित मेरे हृदय में निवास कीजिए।